ट्यूबरक्लोसिस (टी बी) पर एक संक्षिप्त गाइड

पत्रकारों के लिए संसाधन

नवंबर 2015
www.media4tb.org

टी बी का मूल विज्ञान

1. ट्यूबरक्लोसिस या टी बी क्या है?

ट्यूबरक्लोसिस, यानी टी बी, "माईकोबैक्टीरियम ट्यूबरक्लोसिस" नामक कीटाणु से होने वाली, एक तेज़ी से फैलने वाली बीमारी है। टी बी ज़्यादातर फेफड़ों पर असर करता है (जिससे पल्मोनरी टी बी होता है) लेकिन हड्डियों, जोड़ों, गुर्दे, दिमाग, जननांग, पेशाब सम्बन्धी अंग, रीढ़, लसिका, आँतों इत्यादि पर भी असर कर सकता है। जब टी बी फेफड़े के अलावा शरीर के किसी भी अंग पर असर करता है, तो उसे एक्स्ट्रा पल्मोनरी ट्यूबरक्लोसिस कहा जाता है।

2. टी बी कैसे फैलता है?

टी बी हवा के ज़रिये फैलता है। पल्मोनरी टी बी से पीड़ित मरीज़ के खाँसने, थूकने, या छीकने से संक्रमित बलगम की बूँदें हवा में जा सकती हैं। इस हवा में साँस लेने वाले किसी भी व्यक्ति को सक्रीय टी बी हो सकता है।

3. टी बी का असर किस किस पर हो सकता है?

क्योंकि टी बी एक वायुवाहित बीमारी है, यह ऐसे किसी भी व्यक्ति को हो सकता है जिसके शरीर में साँसों के ज़रिये ये कीटाणु प्रवेश कर लेते हैं। यह किसी भी उम्र या आर्थिक वर्ग के लोगों को संक्रमित कर सकता है।

4. साँस से अन्दर आए कीटाणु दूसरे अंगों तक पहुँचकर एक्स्ट्रा पल्मोनरी टी बी कैसे फैलाते हैं?

जब टी बी के कीटाणु साँस के ज़रिये किसी के शरीर के अन्दर जाते हैं, तो वे फेफड़ों में जम सकते हैं, जिससे पल्मोनरी टी बी हो सकता है। लेकिन ये कीटाणु खून या लसीका प्रणाली के ज़रिये दूसरे अंगों तक भी फैल सकते हैं, और उस अंग में जम जाने के बाद संक्रमण का कारण बन सकते हैं।

5. टी बी रोग और टी बी संक्रमण में क्या अंतर है?

हम में से कईओं के अन्दर साँस लेते समय टी बी के कीटाणु घुस जाते हैं, जिसका हमको पता भी नहीं चलता। यानी, हमे टी बी का संक्रमण हो चुका है, लेकिन इसका यह मतलब नहीं की हमे टी बी रोग भी हो गया है। ज़्यादातर लोगों के शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली इन कीटाणुओं को फैलने से आसानी से रोक पाती है। संक्रमित हुए लोगों में से करीब 10 % लोगों में ये कीटाणु बढ़ते जाते हैं और टी बी रोग का कारण बन जाते हैं।

6. किन कारणों से टी बी का खतरा बढ़ता है?

टी बी के संक्रमण से पीड़ित लोगों में आम तौर पर टी बी एक रोग की तरह तब पनपने लगता है, जब उनकी प्रतिरक्षा क्षमता (इम्युनिटी) कम होती है। पोषण में कमी, मधुमेह रोग

और एच आई वी, टी बी के खतरे को बढ़ा देते हैं क्योंकि इनसे व्यक्ति की प्रतिरक्षा क्षमता कम हो जाती है। धूम्रपान भी इस खतरे को बढ़ा देता है, क्योंकि उससे फेफड़े कमज़ोर हो जाते हैं। पल्मोनरी टी बी के मरीज़ के साथ रहने वालों को भी टी बी होने का खतरा रहता है।

7. यदि किसी को पल्मोनरी टी बी है, तो उसे क्या सावधानियाँ बरतनी चाहिएँ, ताकि उससे यह रोग दूसरों को न फैले?

क्योंकि टी बी वायु के ज़रिये फैलता है, इसके फैलाव को रोकने के लिए सबसे ज़रूरी है कि इससे पीड़ित व्यक्ति खाँसते हुए या छींकते हुए अपना मुह तौलिये या रुमाल से ढककर रखें। इसके अलावा, जब टी बी से पीड़ित व्यक्ति का इलाज शुरू हो जाता है, तब उससे संक्रमण फैलने का डर ख़त्म हो जाता है। सही दवाईयों का सही मिश्रण सही मात्रा में लेना बेहद ज़रूरी है। घर में अच्छा वायुसंचार बनाये रखना भी बहुत ज़रूरी है।

नोट : टी बी केवल वायु के ज़रिये फैलता है। यह किसी को छूने से या एक ही बर्तन में खाने - पीने से नहीं फैलता।

8. पल्मोनरी या फेफड़ों के टी बी के क्या लक्षण होते हैं?

- दो हफ्ते से ज़्यादा चलने वाली खाँसी
- बलगम में खून (हेमोपटाईसिस)
- बुखार
- छाती में दर्द
- भूक ना लगना
- वज़न कम होना
- हाँफना

9. अगर किसी को दो हफ़्तों से भी ज़्यादा से लगातार खाँसी हो रही है, क्या उसे टी बी है?

यह टी बी हो सकता है। उसे तुरन्त निश्चित तौर से किसी काबिल डॉक्टर से राय लेकर बलगम परिक्षण द्वारा टी बी की जाँच करवानी चाहिए।

10. पल्मोनरी टी बी का निदान किस तरह किया जाता है?

स्पुटम माइक्रोस्कोपी टेस्ट (खाँसी से निकले हुए बलगम की जाँच) पल्मोनरी टी बी का निदान करने का सबसे अच्छा तरीका है, और उसके बाद, ज़रुरत पड़ने पर छाती का एक्स रे भी निकाला जाता है।

11. क्या खून की जाँच से टी बी का निदान किया जा सकता है?

सेरोलॉजिकल टेस्ट (यानी खून की जाँच) के नतीजे कई बार गलत निकलते हैं, और इन्हे भारत सरकार और विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा टी बी के निदान के लिए निषेध किया गया

है। सरल शब्दों में कहा जाए तो किसी को खून की जाँच द्वारा नहीं पता लग सकता कि उन्हें टी बी है या नहीं।

12. मैनटो टेस्ट क्या होता है?

मैनटो टेस्ट में त्वचा को जाँचा जाता है। इसमें इंजेक्शन के ज़रिये टुबेर्सिलिन नामक एक तरल पदार्थ त्वचा में डाला जाता है। अगर मरीज़ पर इसका कोई प्रभाव होता है तो यह संकेत है कि उसके शरीर में टी बी के कीटाणु हैं। लेकिन इस टेस्ट से सक्रीय टी बी रोग का पता नहीं लगाया जा सकता, केवल उसके कीटाणुओं की मौजूदगी का ही पता लगाया जा सकता है। भारत जैसे देश में, कई लोगों के शरीर में टी बी के कीटाणु मौजूद होते हैं लेकिन ये कभी सक्रिय टी बी रोग का रूप नहीं लेते। ऐसे में मैनटो टेस्ट का ज़्यादा मूल्य नहीं है। यानी इस टेस्ट से आप निश्चित रूप से नहीं जान सकते कि आपको टी बी है या नहीं। लेकिन बच्चों में टी बी का निदान करने के लिए कई बार इस टेस्ट का उपयोग किया जाता है।

13. प्राइमरी कॉम्प्लेक्स क्या होता है ?

बच्चों के टी बी को प्राइमरी कॉम्प्लेक्स या पीडिएट्रिक टी बी कहा जाता है ।

14.क्या टी बी के लिए कोई टीका होता है? क्या यह टीका प्रभावशाली होता है?

इस समय बी सी जी (बैसिल काल्मेत गुएरिन) टीका ही टी बी के लिए एकमात्र उपलब्ध टीका है। बी सी जी टी बी का एक कमज़ोर किया हुआ रूप होता है जो शरीर की इस रोग के प्रति प्रतिरक्षा क्षमता बढ़ाता है। बी सी जी, मैनिंजाइटिस और डिस्सेमिनेटिड टी बी जैसे टी बी के गंभीर रूपों से बच्चों की रक्षा करता है। यह टीका 15 सालों तक सुरक्षा दे सकता है, जिसके बाद इसका प्रभाव कम होने लगता है। बी सी जी कुष्टरोग से भी कुछ सुरक्षा प्रदान करता है।

एक्स्ट्रा पल्मोनरी टी बी

15. एक्स्ट्रा पल्मोनरी टी बी के क्या लक्षण होते हैं?

एक्स्ट्रा पल्मोनरी टी बी में प्रभावित क्षेत्र से जुड़े लक्षण नज़र आयेंगे। जैसे, आँत सम्बन्धी टी बी में व्यक्ति को दस्त हो सकते हैं, या शरीर के किसी जोड़ में टी बी हो तो व्यक्ति को वहाँ दर्द और सूजन महसूस हो सकता है। इसके आलावा, शाम को बुखार आना, भूक न लगना और वज़न घटना भी लक्षण हो सकते हैं।

16. क्या एक्स्ट्रा पल्मोनरी टी बी संक्रामक बीमारी है?

नहीं। केवल पल्मोनरी टी बी, (जो कि वायुवाहित होता है) संक्रामक बीमारी है।

17. एक्स्ट्रा पल्मोनरी टी बी का निदान कैसे किया जाता है?

आदर्शतः एक्स्ट्रा पल्मोनरी टी बी का निदान प्रभावित हुए अंग या स्थल की जाँच करके किया जाता है, उदाहरण के लिए लसीका प्रणाली। यह बाईऑप्सी द्वारा किया जाता है, जिसमे ऑपरेशन द्वारा तंतु का एक छोटा टुकड़ा निकालकर उसे अनुवीक्षण यंत्र के नीचे जाँचा जाता है। अगर बाईऑप्सी करना संभव न हो (जैसे रीढ़ का स्थल) तो लक्षणों के साथ साथ एक्स - रे, सी टी या एम आर आई स्कैन जैसे टेस्टों की मदद से इसका निदान किया जाता है।

टी बी का इलाज

18. क्या टी बी साध्य रोग है?

हाँ, टी बी निश्चित रूप से साध्य रोग है।

19. टी बी का इलाज किस प्रकार किया जाता है?

टी बी का इलाज दवाईओं के मिश्रण से किया जाता है (आईसोनियाजिड, रिफ़ाम्पिसिन, एथाम्बुतोल और पाईराज़िनामईड)। राष्ट्रीय पुनरीक्षित टी बी नियंत्रण कार्यक्रम (RNTCP) के तहत भारत सरकार हर नागरिक को टी बी के निदान और इलाज की सेवाएँ डॉट्स (DOTS) की योजना के ज़रिये निः शुल्क प्रदान करता है।

20. डॉट्स क्या होता है और कैसे काम करता है?

"डायरेक्टली ओबसर्व्द ट्रीटमेंट शोर्ट कोर्स" या DOTS टी बी के नियंत्रण के लिए एक मानकित इलाज प्रणाली है, जिसकी सिफ़ारिश विश्व स्वास्थ्य संगठन ने की है, और जिसका पालन RNTCP के तहत किया जाता है। जब किसी मरीज़ में टी बी का निदान होता है, उसे एक दवाईयों का डिब्बा दिया जाता है जिसमे इलाज के पूरे दौर के लिए दवाइयाँ रहती हैं। इससे सुनिश्चित हो जाता है की दवाइयों की अनुपलब्धि के कारण मरीज़ के इलाज के बीच में कोई रुकावट नहीं आएगी।

इसके अलावा, DOTS की योजना के अनुसार, अगर किसी भी व्यक्ति का टी बी का निदान होता है, उसके लिए एक DOTS प्रबंधक नियुक्त किया जाता है। यह प्रबंधक इस बात की ज़िम्मेदारी लेता है की वह मरीज़ अपनी दवाइयाँ समय पर लेता रहे, वह अपनी इलाज पत्रिका भरवाता रहे, समय पर अपने रिव्यु जाँच के लिए जाता रहे, और वह यह भी सुनिश्चित करता है की मरीज़ अपना इलाज पूरी तरह से ख़त्म कर ले ।

21. DOTS प्रबंधक कौन होता है?

DOTS प्रबंधक एक ऐसा व्यक्ति होता है जो इस बात की ज़िम्मेदारी लेता है की मरीज़ समय पर दवाइयाँ ले रहा है। वह एक डॉक्टर, दवा विक्रेता, पड़ोसी, समाज सेवक, सहकर्मी, या समुदाय का स्वयंसेवक हो सकता है। कोई भी व्यक्ति अपने इलाके में रहने वाले किसी मरीज़ के लिए DOTS प्रबंधक बन सकता है।

22. DOTS के इलाज की अवधि कितनी होती है?

DOTS का इलाज 6 से 8 महीनों तक चलता है। दवा प्रतिरोधी (ड्रग रेसिस्टेंट) टी बी के मरीज़ों का इलाज काफ़ी लम्बा चलता है, कई बार दो सालों तक।

23. क्या इलाज पूरी तरह खत्म करना ज़रूरी है? अगर कोई पहले से बेहतर महसूस करने लगे तो क्या वह दवाएँ लेना बंद कर सकता है?

नही, इलाज को पूरी तरह खत्म करना बेहद ज़रूरी है। इलाज के शुरू होने के कुछ हफ़्तों बाद पूरी संभावना है कि मरीज़ पहले से बेहतर महसूस करने लगे, लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि वह रोग मुक्त हो गया है। टी बी की दवाईयाँ शक्तिशाली प्रतिजैविक दवाएँ होती हैं, और यह ज़रूरी है कि इलाज को पूरी तरह ख़त्म किया जाए ताकि मरीज़ को फिरसे टी बी न हो जाए, और उसका शरीर टी बी की दवाईयों के प्रति प्रतिरोधी न हो जाए (जिससे और भी गंभीर समस्या पैदा हो सकती है - ड्रग रेसिस्टेंट यानि दवा प्रतिरोधी टी बी)

24. क्या मरीज़ों को टी बी के इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती होना पड़ता है?

नही, टी बी का इलाज बहिरोगी (आऊट पेशेंट) के रूप में आसानी से किया जा सकता है। केवल गंभीर केस और कठिन इलाज की व्यवस्था के लिए अस्पताल में भर्ती होना पड़ता है।

25. क्या टी बी का इलाज बहुत महंगा होता है?

नही, टी बी का इलाज सभी सरकारी केन्द्रों पर निःशुल्क तौर पर उपलब्ध है। लेकिन निजी सेक्टर में इसके दाम में बहुत भिन्नता है - टी बी के पूरे इलाज की दवाइयाँ, किसी दवाखाने में छह महीनों के लिए 6000 से लेकर 12000 रूपए तक हो सकता है। यह मूल्य बताई गई दवाइयों पर निर्भर करता है। दवा प्रतिरोधी टी बी के लिए निजी सेक्टर में इलाज कई लाखों तक भी जा सकता है।

दवा प्रतिरोधी टी बी

26. दवा प्रतिरोध का क्या अर्थ होता है?

जब टी बी की दवाईयाँ उसके कीटाणुओं को मारने में नाकामियाब हो जाती हैं, तो उसे दवा प्रतिरोध कहा जाता है। ये कीटाणु कुछ विशिष्ट दवाइयों के प्रति रेसिस्टेंट (प्रतिरोधी) हो जाते हैं और इन पर उन दवाईयों का असर होना बंद हो जाता है।

27. मल्टी ड्रग रेसिस्टेंट टी बी या एम डी आर टी बी कैसे होता है?

जब किसी टी बी मरीज़ पर टी बी के निदान में उपयोग की जाने वाली दो सबसे ज़रूरी दवाइयों (आइसोनियाज़िड और रिफ़ाम्पिसिन) का असर होना बंद हो जाये (चाहे बाकी दवाइयों का असर सामान्य तरीके से हो रहा हो या नहीं), तो कहा जाता है कि उस मरीज़ को एम डी आर टी बी है। इसका कारण हो सकता है कि उसने बताई हुई दवाइयाँ या तो

नियमित रूप से नहीं ली, या फिर निदान की पूरी अवधि के लिए नहीं ली। ऐसे केस में कीटाणु इन दवाइयों के प्रति प्रतिरोधी बन सकते हैं और मरीज़ को एम डी आर टी बी हो सकता है। कभी कभी लोगों को सीधे एम डी आर टी बी भी हो सकती है अगर एम डी आर टी बी के कीटाणु उनके शरीर में साँस के ज़रिये अन्दर चले जाएँ।

28. एम आर टी बी के क्या लक्षण होते हैं?

एम डी आर टी बी के लक्षण "साधारण" टी बी जैसे ही होते हैं - लगातार चलने वाली खाँसी, छाती में दर्द, बुखार, भूक न लगना और वज़न कम होना। जो लोग नियमित रूप से किसी एम डी आर टी बी के मरीज़ के आसपास रहते हों या किसी ऐसे टी बी मरीज़ के पास रहते हों जिसकी दवाई बीच में छूट गई हो, उन्हें इस बीमारी का ज़्यादा खतरा है और उन्हें सावधानी बरतनी चाहिए।

29. एम डी आर टी बी का निदान कैसे होता है?

एम डी आर टी बी के निदान के लिए बलगम के सैंपल कल्चर* और ड्रग सेंसिटिविटी टेस्ट के लिए भेजे जाते हैं। लेकिन कल्चर सेंसिटिविटी टेस्ट के परिणाम आने में 3 से 6 हफ्ते लूग सकते हैं (इस टेस्ट में बलगम का कल्चर करके कीटाणुओं की टी बी के विरोधक पदार्थों के प्रति प्रतिरोध परखी जाती है)। हाल मे टी बी के निदान और रिफ़ाम्पिसिन के प्रति रेजिस्टेंस परखने के लिए जीन एक्सपर्ट नामक एक नए तरीके का विकास किया गया है।

*कल्चर का मतलब है टी बी के कीटाणुओं को प्रयोगशाला के माध्यम से विकसित करना।

30. जीन एक्सपर्ट का क्या अर्थ है?

जीन एक्सपर्ट एक परिवर्तनवादी आणविक टेस्ट है जो टी बी के कीटाणु और उनकी रिफ़ाम्पिसिन के प्रति प्रतिरोध परखने में मदद करता है। अर्थात जो टी बी के मरीज़ रिफ़ाम्पिसिन के प्रति प्रतिरोधी हैं, वे शुरू में ही पहचान लिए जाते हैं, और उन्हें उपयुक्त इलाज दिया जाता है। पहले के कल्चर सेंसिटिविटी टेस्टों के मुकाबले जीन एक्सपर्ट टेस्ट दो घंटों में परिणाम दे सकता है। 2010 में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इस तकनीक को बड़े पैमाने पर उपयोग करने की सिफ़ारिश की, और यह संगठन इस तकनीक के विश्वभर में फैलाव पर नियंत्रण रखता है। जीन एक्सपर्ट टेस्ट भारत में RNTCP के तहत विभिन्न चरणों में आरंभ किया जा रहा है।

31. क्या एम डी आर टी बी साध्य रोग है?

हाँ , एम डी आर टी बी का इलाज मूमकिन है, हालाकि यह इलाज काफ़ी लम्बा चलता है, कई बार दो सालों के लिए भी। लेकिन "सामान्य" टी बी के मुकाबले, केवल 50 % लोग ही इससे पूरी तरह ठीक हो पाते हैं। हाल में दो नई दवाईयाँ, बेडक्वीलाइन और डेलामानिड, FDA (खाद्य और दवा प्रशासन) और EMA (यूरोपी दवाई एजेन्सी) द्वारा एम डी आर टी बी के इलाज के लिए कुछ शर्तों के आधार पर अनुमोदित किए गए हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसके उपयोग के लिए मार्गदर्शन प्रकाशित किया है। भारत में बेडक्वीलाइन तक पहुँच अभी सीमित है और डेलामानिड का उपयोग अनुमोदित नहीं किया गया है।

32. एक्स डी आर टी बी या एक्सट्रीमली रेसिस्टेंट टी बी (अत्यंत प्रतिरोधी टी बी) क्या होता है?

एक्स डी आर टी बी एम डी आर टी बी की एक विकसित अवस्था है। इसमें कीटाणु आइसोनियाज़िड और रिफ़ाम्पिसिन के अलावा, एम डी आर टी बी के इलाज में उपयोग किये जाने वाली दो सबसे ताकतवर दवाईयाँ - फ्लोरोक्विनोलोन और इंजेक्टेबल दवाइयों - के प्रति भी प्रतिरोधी होते हैं। क्योंकि एक्स डी आर टी बी का मरीज़ टी बी के इलाज मे उपयोग किये जाने वाली मुख्य दवाईयों के प्रति प्रतिरोधी होता है, इलाज के विकल्प काफ़ी सीमित और महंगे होते हैं, और इनके कई दुष्प्रभाव भी होते हैं।

भारत में टी बी

33. क्या टी बी भारत में एक गंभीर रोग है?

टी बी भारत की सबसे बड़ी सार्वजनिक स्वास्थ्य चुनौतियों में से एक है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, दुनिया के सभी देशों में से भारत में सबसे ज़्यादा टी बी के केस रिकॉर्ड किये गए हैं। माना जाता है कि 2014 में भारत में करीब 22 लाख टी बी के केस थे, और 80000 एम डी आर टी के केस। 2014 में भारत में करीब 220000 मौतें टी बी से जुड़ी हुई थीं।

34. टी बी के नियंत्रण और देख रेख में सरकार की क्या भूमिका है?

1962 में भारत सरकार ने राष्ट्रीय टी बी कार्यक्रम की शुरुआत की थी। लेकिन इसके प्रभावकारिता का सर्वेक्षण करने के बाद संशोधित राष्ट्रीय टी बी नियंत्रण कार्यक्रम (आर एन टी सी पी / RNTCP) 1998 में अलग अलग चरणों में लागू किया गया। इसके द्वारा सरकार देश में फैले केन्द्रों के ज़रिये टी बी के मुफ्त निदान और इलाज की उत्तम सुविधाएँ उपलब्ध कराती है। आर एन टी सी पी पूरे भारत में डॉट्स कार्यक्रम लागू करवाती है, जिसकी सिफ़ारिश विश्व स्वास्थ्य संगठन ने की है। इस कार्यक्रम के बारे में और जानकारी आपको www.tbcindia.nic.in पर मिलेगी।

35. टी बी की रोकथाम और देख रेख में निजी स्वास्थ्य सेक्टर की क्या भूमिका है?

कई अध्ययनों के अनुसार, भारत में 50 % से भी ज़्यादा लोग अपने निदान और इलाज के लिए निजी (प्राइवेट) स्वास्थ्य सेवा सेक्टर में जाते हैं, और टी बी के लिए भी ऐसा ही होता है। निजी चिकित्सक टी बी का इलाज करने के लिए अपनी खुद की प्रणाली अपना सकते हैं, हालाकि वे चाहें तो आर एन टी सी पी कार्यक्रम का हिस्सा बनकर अपने मरीजों का इलाज DOTS से भी करवा सकते हैं। मई 2012 में सरकार ने टी बी को सूचनीय रोग बना दिया, ताकि टी बी के केस सही तरह से ट्रैक हो पाएँ और हर मरीज़ अपना इलाज पूरी तरह सुनिश्चित रूप से ख़त्म कर ले।

इसका मतलब है की हर एक सार्वजानिक और प्राइवेट क्लिनिक, स्वास्थ्य प्रबंधक, एन जी

ओ और निजी चिकित्सक को अपने टी बी के केसों के बारे में नियुक्त किये गए स्थानीय अधिकारीयों को सूचना देनी होती है। लेकिन असल में हमेशा ऐसा नहीं होता। नतीजा - हमारे पास निजी सेक्टर के उन मरीजों पर अभी तक पर्याप्त डाटा नहीं है जिनका टी बी का निदान हुआ है ।

टी बी - एक सामाजिक रोग

36. टी बी को अक्सर एक सामाजिक / सामाजिक-आर्थिक रोग क्यों कहा जाता है?

बाकी लम्बी चलने वाली बीमारियों की तरह टी बी का भी व्यक्ति पर कई तरह का प्रभाव होता है। शारीरिक लक्षणों के अलावा, टी बी से मरीज़ों की कमाने की क्षमता कम हो जाती है, और वे कई बार अपने परिवार के लिए कमा नहीं पाते। कई बार टी बी को कलंक माना जाता है और मरीजों को नौकरी या परिवार से बहिष्कृत कर दिया जाता है।

37. टी बी और गरीबी के बीच क्या सम्बन्ध है?

पारंपरिक रूप से टी बी को हमेशा गरीबों पर असर करने वाली बीमारी माना जाता है। लेकिन यह हमेशा सच नहीं होता। टी बी हवा से फैलने वाली बीमारी है, और ये कम प्रतिरक्षा क्षमता वाले किसी भी व्तक्ति को हो सकता है। गरीबी में रहने वाले लोगों को अपने आर्थिक स्थिति के कारण शायद ज़्यादा खतरा हो सकता है, क्योंकि यह उनके जीवनशैली और आस पास के हालातों पर असर करता है । उदहारण के लिए - ज़्यादा भीड़ वाले घरों में रहना, घर में कम वायुसंचार होना या कुपोषण के कारण कम प्रतिरक्षा क्षमता होना।

38. क्या टी बी से पीड़ित लोगों को किसी प्रकार के कलंक का सामना करना पड़ता है?

टी बी के मरीज़ों को एक हद तक कलंक का सामना करना पड़ता है, और उन्हें बहिष्कृत किये जाने या अकेले छोड़ दिए जाने का खतरा रहता है। इसके अतिरिक्त, आज भी टी बी कई पुरानी काल्पनिक कहानियों और भ्रमों से जोड़ा जाता है, जिससे उसे और भी बड़ा कलंक माना जाता है। उदहारण के लिए कई लोगों को लगता है कि टी बी वंशानुगत बीमारी है, जबकि ऐसा नहीं है। ऐसे भ्रमों के कारण कई टी बी से पीड़ित महिलाएँ अपने परिवार तक से अपने टी बी के निदान की बात छुपाकर रखती हैं। टी बी का कलंक कुछ लोगों के लिए नौकरी, कमाई, और घर गवा देने का खतरा पैदा कर देता है।

39. क्या महिलाओं को मर्दों के मुकाबले अलग रूप में कलंक का अनुभव करना पड़ता है?

चाहे टी बी के मरीज़ का लिंग या सामाजिक परिस्थिती जो भी हो, कलंक उपस्थित रहता ही है। लेकिन इस कलंक का प्रभाव मर्दों के मुकाबले महिलाओं पर ज़्यादा होता है। सामान्य तौर पर मर्दों को अपनी नौकरी और आमदनी से हाथ धोना पड़ जाता है, जिससे वे गरीबी

का अनुभव करने लगते हैं और कभी कभी तटस्थता का भी। दूसरी और, ज़्यादातर महिलाएँ को अपने ही परिवार, दोस्तों और ससुराल वालों के कारण शर्मिंदगी और तटस्थता का अनुभव करना पड़ता है। शादीशुदा महिलाओं को कई बार घर से निकाल दिया जाता है। अक्सर महिलाओं को छुप छुपकर इलाज करवाना पड़ता है, और उनके सिर पर परिवार को उनकी बीमारी के बारे में पता लगने का दर हमेशा मंडराता रहता है। कुछ अध्ययनों के अनुसार, जहाँ महिलाओं को टी बी के शारीरिक प्रभावों से जूझना मुश्किल लगता है, उन्हें सबसे ज़्यादा कठिन लगता है इससे जुड़े कलंक से जूझना ।

40. टी बी से किसी व्यक्ति पर मानसिक प्रभाव कैसे पड़ता है?

टी बी से जुड़े कलंक और भ्रम मरीज़ों पर मानसिक प्रभाव का कारण बन जाते हैं। ऐसी भी घटनाएँ घटी हैं जहाँ टी बी के मरीज़ों ने तटस्थता और निराशा के कारण आत्महत्या की है। किसी भी टी बी के मरीज़ के लिए सलाह और सामाजिक सहारा बहुत ज़रूरी है। इसमें परिवार वालों और दोस्तों की भूमिका अहम है। टी बी का इलाज सामान्य तौर पर दो महीने या उससे ज़्यादा चलता है। इस समय के दौरान, मरीज़ को अपने परिवार, दोस्तों, शुभचिंतकों और समुदाय के सदस्यों के सहारे की ज़रुरत होती है। उचित सहारा मिलने से मरीज़ उदासी और निराशा के दलदल में धँसने और इलाज छोड़ देने से बच सकता है।

ट्यूबरक्लोसिस (टी बी) के बारे में एक संक्षप्ति गाइड

पत्रकारों के लिए एक संसाधन

नवम्बर 2015 (V 2)
www.media4tb.org

This document is intended as a resource for journalists who are reporting on TB for the first time or for those who wish to improve their understanding of TB. This document will remain a work in progress and will be updated as and when there are new scientific or social developments. If you spot any errors or wish to suggest any additions, please feel free to email us at reach4tb@gmail.com. Thank you!

The publication of this document is supported by a United Way Worldwide grant made possible by the Lilly Foundation on behalf of the Lilly MDR-TB Partnership.

You can find out more about REACH at www.reachtbnetwork.org

COMPUPRINT • 28116768